चम्पा - अनाम संघर्ष

जयसिंहवर्मा तृतीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र "हरिजितात्मज" महेन्द्रवर्मा चम्पा का राजा बना। उसके पिता ने जिस प्रकार स्वर्णों के विनिमय और स्वांग-नाम के उत्तरी भागों को अनाम नरेश को प्रदान कर दिया था, वह उसकी आँखों में शूल की तरह चुभ रहा, उन प्रदेश निवासियों को भी विदेशी शासन असह्य था। चम्पा और अनाम का संघर्ष का कारण बढ़ने लगा और निरंतर विद्रोह होने लगे। अनाम के उपनिवेशकों तथा राजकर्मचारियों के लिए वहाँ रह सकना सम्भव नहीं रहा। अनाम के राजा चम्पा पर आक्रमण करने का निश्चय किया और अनाम की एक शक्तिशाली सेना ने चम्पा पर चढ़ाई कर दी।

अनाम की विशाल और शक्तिशाली सेना का सामना कर सकना चम्पा के राजा के लिए कठिन था। चम्पा के राजा भयभीत होकर सपरिवार समुद्री मार्ग द्वारा अनाम के राजा के पास जाकर आत्मसमर्पण करना पड़ा। लेकिन चम्पा की सेना राजा के समान कायर नहीं थी उन्होंने अनाम के सेना का डटकर मुकाबला किया, लेकिन वह अन्त में परास्त हो गयी। चम्पा की सेना के कर्तव्य को देखकर अनह-होअंग बहुत क्रोधित हुआ और उसने महेन्द्रवर्मा को कैद में डाल दिया। अब चम्पा अनाम की अधीनता में आ गया।

कुछ समय पश्चात अनाम के राजा अनह होअंग ने स्वेच्छापूर्वक गद्दी का परित्याग कर दिया और उसका पुत्र मिन्ह-होअंग अनाम का राजा बना। चे-नांग ने इस राजपरिवर्तन से लाभ उठाना चाहा और उसने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया पर उसके लिए अनाम की शक्ति के मुकाबले में अपनी स्वतंत्रता को कायम रख सकना सुगम न होना था। अनाम की सेनाओं द्वारा उसे परास्त कर दिया गया।

चम्पा की स्वतंत्रता :→ समय चक्र का फायदा उठा कर चम्पा अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। 1318 में चम्पा पर अनाम का प्रभुत्व स्थापित हो गया, अब कोई राजा नहीं रह गया था। इस दशा में अनाम के राजा द्वारा आ-नान

नायक सेनापति को चम्पा का शासक नियुक्त किया गया। सम्भवतः आ-नान चम्पा का निवासी था और उसका सम्बन्ध यहाँ के किसी कुलिन सैनिक परिवार के साथ था। चम्पा के शासन-सूत्र को संभाल कर आ-नान ने भी चे-नान का अनुसरण किया, और अनाम की अधिनता से मुक्त होकर चम्पा का स्वतंत्र राजा बन जाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। इसी उद्देश्य से उसने मंगोलों से सम्पर्क स्थापित किया, और चीन के मंगोल सम्राट से सहायता की याचना की। आ-नान के इस रवैये को देखकर अनाम के राजा ने चम्पा पर आक्रमण कर दिया। पर अनाम की सेना आ-नान को परास्त नहीं कर सकी। अब वह पूर्णतः स्वतंत्र हो गया। आ-नान एक योग्य एवं शक्तिशाली राजा था। उसने अनाम की अधिनता से चम्पा मुक्त किया।

आ-नान के बाद उसका जामाता वो दे चम्पा के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। आ-नान का एक ही पुत्र था जिसका नाम चे मो था। वह राजगद्दी पर अपना अधिकार समझता था ~~अतः उसने वो दे के विरुद्ध षड्यन्त्र प्रारम्भ कर दिया~~ पर सफल नहीं हो सका। उसने जाकर अनाम में शरण ली तथा अनाम की सहायता से चम्पा पर चढ़ाई कर दिया। पर वो दे परास्त नहीं हो सका।

चम्पा का उत्कर्ष → 1360 ई० के लगभग चे-बोंग-न्गा चम्पा का राजा बना। उस राजा का वो-दे के साथ क्या सम्बन्ध था, ज्ञात नहीं है। चम्पा के ये राजा भी अनाम से अपने देश के उत्तरी प्रदेशों को प्राप्त कर लेने के लिए उत्सुक था। इसलिए उसने जल और स्थल मार्गों से अनाम पर हमला कर दिया, वहाँ के अनेक नगरों को लूटकर प्रचुर सम्पत्ति प्राप्त की। अनाम के राजा ने इसका बदला लेने के लिए एक शक्तिशाली सेना को चम्पा में भेजा जो चे-बोंग-न्गा द्वारा परास्त हो गया। 1369 में तू-होआंग की मृत्यु हो गई और वहाँ की राजगद्दी के लिए झगड़े प्रारम्भ हो गई। तू-होआंग के पुत्र को कैद में डालकर उसके भाई नियाना-होआंग ने राजगद्दी प्राप्त कर ली। जिसपर तू-ओंग की विधवा रानी ने चम्पा जाकर वहाँ के राजा चे-बोंग-न्गा से सहायता की याचना की। चम्पा का राजा इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने समुद्र मार्ग द्वारा अनाम पर आक्रमण कर दिया, और उसके राजधानी पर कब्जा कर लिया।

Scanned with CamScanner

वहाँ के राजप्रसाद को ध्वंश कर बहुत सी सम्पत्ति लूट कर अपने साथ (सम्पत्ति के साथ) अपने देश को वापस आया।

चम्पा और अनाम में निरंतर युद्ध होता रहा और एक दूसरे में प्रतिशोध की भावना जागृत होती रही। 1372 में त्रिवाङ्ग होआंग ने राज सिंहासन का परित्याग कर दिया। और उनके स्थान पर स्वाम-होआंग अनाम का राजा बना। 1377 में उसने बड़ी सेना के साथ चम्पा पर आक्रमण किया। इस सेना में सैनिकों की संख्या 1,20,000 से भी अधिक थी। चम्पा में आगे बढ़ती हुई ये सेना विजय नगरी तक पहुँच गई पर वहाँ चम्पा की सेना ने अनुपम रणनीति प्रदर्शित की और अनाम की बुरी तरह हार हुई। पर चाँग-बोंग-न्गा राजा स्वाम होआंग उस लड़ाई में मारा गया। अनाम की सेना को परास्त करके ही संतुष्ट नहीं हो गया उसने तुरन्त एक शक्तिशाली जहाजी बेड़े द्वारा अनाम पर आक्रमण कर दिया, और उसकी राजधानी को बुरी तरह लूटा। अनाम के स्वाम-होआंग के मृत्यु के बाद गिआन-होआंग अनाम के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। वह चम्पा की सेना का मुकाबला करने में असमर्थ रहा। चे-बोंग-न्गा ने कई बार अनाम पर आक्रान्त कर वहाँ मनमाने ढंग से लूट-पाट मचाई। अनाम के राजा उसके आक्रमण से अनाम में आतंक छा गया। अनाम के राजा ने अपना राजकोष राजधानी से हटाकर पहाड़ी-गुफाओं में छिपा दिया। चम्पा शासक ने सम्पूर्ण अनाम अपनी अधीनता में कर लिया। यह स्थायी रूप से उस पर अपना अधिकार स्थापित नहीं कर सका। अभी वह अनाम की विजय को पूरा करने में लगा हुआ था कि उसकी मृत्यु हो गई। चम्पा की सेना का एक सेनापति शत्रु से मिला हुआ था। उसने अपनी सेना के भेद अनाम को दे दिया। वह बता दिया कि चे-बोंग-न्गा जिस जहाज में रह कर सेना का संचालन करता है उसका रंग हरा है। यह ज्ञात होते ही अनाम की सेना ने उस जहाजों पर गोलों की बौछार शुरु कर दी, और चम्पा के राजा चे-बोंग-न्गा मारा गया। राजा के मरते ही चम्पा की सेना में भगदड़ मच गई। ला खै नामक सेनापति ने चम्पा की सेना को अनाम से वापस लौटने का आदेश दिया और दिन-रात चलकर यह सेना अपने देश पहुँचने में सफल हुई।

चम्पा पहुँचते ही ला खै ने अपने को राजा घोषित कर दिया। चे-बोंग-न्गा के दो पुत्र थे और

पर उन्हीं का अधिकार था पर लाउ-सें ने कोई परवाह नहीं की उन
पुत्रों को अन्नाम जाकर शरण लेना पड़ा। पर अन्नाम द्वारा उन्हें
गद्दी दिलाने का प्रयास नहीं गया। लाउ-सें द्वारा चम्पा में
एक नए राजवंश का प्रारम्भ किया, जो त्रिभुवंश कहलाता है।
चम्पा और अन्नाम
में जो संघर्ष चिरकाल से चला आ रहा था, उसका पुनः
उग्र रूप से प्रारंभ हो गया। चम्पा और अन्नाम के राजाओं
द्वारा मौका पाकर एकदूसरे पर आक्रमण निशाना बनाते रहे।
और संघर्ष का सिलसिला हर नए राजा के सामने युद्ध का
सामना करना पड़ा। चम्पा का अन्तिम राजा पो चीओ था।
वह अन्नाम की ज्यादतियों को सह सकने में असमर्थ
होकर कम्बुज में जाकर शरण ली। इस प्रकार
चम्पा के प्राचीन भारतीय उपनिवेश की स्वतंत्रता एवं पृथक्
सत्ता का अन्त हुआ।